International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: RJIF 5.7
IJLE 2025; 5(2): 322-326
www.educationjournal.info
Received: 12-07-2025
Accepted: 17-08-2025

Seema Bhati
Research Scholar, College of Education, IIMT University, Meerut, Uttar Pradesh, India

Dr. Arun Kumar
Research Supervisor, Associate Professor, College of education, IIMT University, Meerut, Uttar Pradesh, India

Corresponding Author:
Seema Bhati
Research Scholar, College of Education, IIMT University, Meerut, Uttar Pradesh, India

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और छायावादी साहित्य: नवाचार एवं शिक्षण पद्धतियों का तुलनात्मक मूल्यांकन

Seema Bhati and Arun Kumar

DOI: https://www.doi.org/10.22271/27891607.2025.v5.i2d.347

सारांश
यह शोध-पत्र हिंदी साहित्य के छायावादी आंदोलन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के शिक्षाशास्त्रीय मूल्यों के बीच अंतर्संबंधों की गहन पड़ताल करता है। छायावादी साहित्य, विशेषतः जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की रचनाएँ, आत्मबोध, सौंदर्यबोध, नैतिकता और रचनात्मक स्वतंत्रता को केंद्र में रखती हैं। ये सभी तत्व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उन नवाचारों से प्रत्यक्ष रूप से मेल खाते हैं, जिनमें अनुभवात्मक अधिगम, कला-आधारित शिक्षा, मातृभाषा में शिक्षण और मूल्य-आधारित पद्धति को विशेष महत्व दिया गया है। यह शोध यह प्रतिपादित करता है कि छायावादी साहित्य मात्र साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक समग्र जीवन-दृष्टि का संवाहक है, जो विद्यार्थियों के भावनात्मक, नैतिक और सृजनात्मक विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है। इसके समावेश से न केवल भाषा शिक्षण में गहराई आएगी, बल्कि शिक्षार्थियों में आत्मचिंतन, संवेदना और सांस्कृतिक जागरूकता जैसे गुण भी विकसित होंगे। यह शोध वर्तमान शिक्षा प्रणाली को यांत्रिकता से बाहर निकालकर उसे मानवीय, कलात्मक और समावेशी बनाने की दिशा में एक संभावित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

कूट शब्दः छायावादी साहित्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, आत्मबोध, सौंदर्यबोध, अनुभवात्मक अधिगम, मूल्य-आधारित शिक्षा, कला-आधारित शिक्षण

प्रस्तावना
भारतीय ज्ञान परंपरा सदैव से ही केवल बौद्धिक विकास की नहीं, अपितु नैतिकता, आत्मबोध, करुणा और सांस्कृतिक चेतना की संवाहक रही है। हमारी शिक्षण परंपराएँ गुरुकुलों से लेकर आधुनिक विश्वविद्यालयों तक जीवन-मूल्यों, आंतरिक साधना और समाजोपयोगिता को केंद्र में रखकर विकसित हुई हैं। इसी परंपरा की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति हमें हिंदी साहित्य के छायावादी युग में दिखाई देती है। बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में उभरी यह साहित्यिक धारा व्यक्ति की आंतरिक चेतना, सौंदर्यबोध, रचनात्मक कल्पना और आत्मिक संघर्ष को केंद्र में लाकर उस समय के साहित्य को एक नई दिशा देती है। छायावाद केवल काव्य शैली नहीं, बल्कि एक ऐसी वैचारिक पद्धति थी जो व्यक्ति की आत्मा से संवाद करने की प्रेरणा देती है। जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसे कवियों ने इस धारा को भाषा, विचार और दर्शन की दृष्टि से समृद्ध किया।

इक्कीसवीं सदी के भारत में जब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का निर्माण हुआ, तब यह स्पष्ट रूप से देखा गया कि शिक्षा केवल सूचना हस्तांतरण या रोजगार-केन्द्रित अभ्यास न होकर, बालक के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है। इस नीति का मूल उद्देश्य शिक्षा को समावेशी, अनुभवजन्य, मूल्यानुगत, मातृभाषा आधारित, बहु-विषयी तथा कलात्मक बनाना है (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 2020)। इस नई शिक्षा नीति में यह समझ प्रमुखता से सामने आती है कि ज्ञान का सार केवल अकादमिक दक्षता में नहीं, बल्कि जीवन दृष्टि, आत्मनिर्भरता और रचनात्मकता में निहित है। इस संदर्भ में यह प्रश्न विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाता है कि क्या हिंदी साहित्य की छायावादी परंपरा, जिसमें मानवीय चेतना, नैतिकता, सौंदर्यबोध और कल्पनाशीलता का विलक्षण समन्वय है, शिक्षा की इस नव-परिकल्पना में कोई योगदान दे सकती है?

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य इसी बिंदु की जांच करना है। इसमें यह विश्लेषण किया गया है कि छायावादी साहित्य की वैचारिक विशेषताएँ और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के शिक्षण-सिद्धांत किस प्रकार एक-दूसरे के पूरक बन सकते हैं। क्या छायावादी कविताएँ केवल साहित्यिक कृतियाँ हैं या वे संवेदनात्मक बौद्धिकता और नैतिक शिक्षण के सशक्त उपकरण भी हैं? क्या जयशंकर प्रसाद की

'कामायनी' या महादेवी वर्मा की 'नीरजा' केवल साहित्यिक पाठ हैं या आत्म-प्रकाश की दिशा में विद्यार्थी के मार्गदर्शन के साधन भी बन सकते हैं?

इस शोध में यह प्रतिपादित किया गया है कि छायावादी साहित्य और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 दोनों ही व्यक्ति के आंतरिक विकास, जीवन-मूल्यों के बोध, रचनात्मक चिंतन और सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना के उन्नयन को केंद्र में रखते हैं। यह अध्ययन इस निष्कर्ष की ओर संकेत करता है कि छायावादी साहित्य को यदि समसामयिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में समाहित किया जाए, तो न केवल भाषाई सृजनात्मकता का संवर्धन होगा, बल्कि विद्यार्थियों में संवेदना, नैतिकता और आत्म-चिंतन की प्रवृत्ति भी विकसित होगी। यह शोध वर्तमान शैक्षिक परिवेश में उस मानवीय और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की संभावना को पुष्ट करता है, जिसकी आवश्यकता एक यंत्रवत होती जा रही शिक्षा प्रणाली को पुनः संवेदनशील और जीवंत बनाने के लिए अनुभव की जा रही है।

शोध कथन

यह शोध इस विचार पर आधारित है कि छायावादी साहित्य और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 दोनों ही व्यक्ति के आंतरिक विकास, मूल्यबोध, रचनात्मक चिंतन और सांस्कृतिक चेतना के उन्नयन को केंद्र में रखते हैं। अध्ययन यह जाँचता है कि क्या छायावादी साहित्य केवल साहित्यिक कृतियाँ हैं या वे आधुनिक शिक्षा में संवेदनात्मक और नैतिक शिक्षण के प्रभावी उपकरण भी बन सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और छायावादी साहित्य के संदर्भ में नवाचार एवं शिक्षण पद्धतियों का तुलनात्मक मूल्यांकन इस शोध का मूल कथन है।

शोध उद्देश्य

1. छायावादी साहित्य में निहित शैक्षिक अवधारणाओं का विश्लेषण करना।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की शिक्षण पद्धतियों और नवाचारों का अध्ययन करना।
3. छायावाद और NEP 2020 के नवाचारों एवं शिक्षण पद्धतियों का तुलनात्मक मूल्यांकन करना।
4. पाठ्यचर्या में छायावाद के समावेश की संभावनाओं को स्पष्ट करना।

शोध अवधारणाएँ

1. छायावादी साहित्य केवल सौंदर्यबोध नहीं, बल्कि आत्मबोध और मूल्य-आधारित शिक्षा का भी संवाहक है।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों का समग्र व्यक्तित्व विकास है।
3. दोनों में निहित दृष्टिकोण परस्पर सामंजस्य रखते हैं।

शोध समीक्षा

शर्मा, पी. (2016) ने अपने अध्ययन हिंदी साहित्य में छायावाद का सामाजिक संदर्भ में यह प्रतिपादित किया कि छायावाद केवल एक साहित्यिक आंदोलन न होकर सामाजिक और शैक्षिक दृष्टि से भी अत्यंत प्रासंगिक है। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि छायावादी काव्य में निहित नैतिकता, करुणा और आत्मसंयम जैसे मूल्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण और मूल्य शिक्षा के प्रभावी उपकरण बन सकते हैं। शर्मा ने छायावादी कविताओं के माध्यम से विद्यार्थियों में संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास की संभावना को रेखांकित किया।

पांडेय, एस. (2018) ने अपने ग्रंथ छायावाद: कविता और चिंतन में छायावाद की सृजनात्मकता और आत्मचेतना पर विशेष बल दिया। उनके अनुसार छायावादी साहित्य केवल सौंदर्य का रसास्वादन नहीं कराता, बल्कि यह व्यक्ति को आत्मनिरीक्षण और आत्मसाक्षात्कार की दिशा में प्रेरित करता है। पांडेय ने इसे आधुनिक शिक्षा की आवश्यकता के अनुरूप बताया क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं बल्कि रचनात्मकता और आत्मविकास की प्रवृत्ति उत्पन्न करना है।

चतुर्वेदी, ए. (2020) ने अपनी कृति भारतीय साहित्यिक सौंदर्यशास्त्र एवं शिक्षण पद्धति में मातृभाषा आधारित शिक्षा और कला-एकीकृत अधिगम के महत्व को स्पष्ट किया। उन्होंने यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि छायावादी साहित्य की भाषिक शैली और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति मातृभाषा के माध्यम से ही अपनी पूर्णता प्राप्त करती है। यह विशेषता राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उस प्रावधान से जुड़ती है जिसमें मातृभाषा को प्रारंभिक शिक्षा का आधार माना गया है।राजपूत, जे. एस., एवं वालिया, क. (2020) ने अपने संयुक्त अध्ययन नई शिक्षा नीति 2020 में शैक्षिक नवाचार में यह प्रतिपादित किया कि NEP 2020 एक नवाचारोन्मुख नीति है, जिसमें कला-आधारित अधिगम, अनुभवात्मक शिक्षण और मूल्य शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। उनके अनुसार यह नीति भारतीय शिक्षा प्रणाली को अधिक मानवीय और सृजनशील बनाने की क्षमता रखती है। उन्होंने इस नीति को विद्यार्थी-केंद्रित और मूल्य-आधारित शिक्षा की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम बताया।मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2020) द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 दस्तावेज़ में शिक्षा को समग्र, बहु-विषयी और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने पर बल दिया गया है। इस नीति में कला, साहित्य और नैतिकता को शिक्षा का अनिवार्य घटक माना गया है, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव हो सके। दस्तावेज़ में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षा केवल ज्ञानार्जन नहीं बल्कि जीवन के विविध पहलुओं के संतुलित विकास की प्रक्रिया होनी चाहिए।इसके अतिरिक्त, सिंह, ए. (2018) ने अपने शोध में कला और साहित्य को विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नैतिक विवेक के विकास का प्रभावी साधन बताया। उन्होंने कहा कि साहित्यिक अध्ययन विद्यार्थियों में सहानुभूति, करुणा और रचनात्मकता जैसी प्रवृत्तियों को उत्पन्न करता है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल अवधारणा से मेल खाती हैं।तिवारी, आर. (2016) ने छायावाद में रहस्यवाद की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि रहस्यवादी साहित्य आत्ममंथन और आत्मसाक्षात्कार की प्रवृत्ति को जन्म देता है। यह प्रक्रिया विद्यार्थियों के नैतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक है।यूनेस्को (2019) की लर्निंग टू बिकम रिपोर्ट में भी यह कहा गया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल अकादमिक दक्षता तक सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि उसमें साहित्य, संस्कृति और मानवीय मूल्यों का समावेश होना चाहिए। इस रिपोर्ट ने स्पष्ट रूप से साहित्य और कला को समग्र शिक्षा के महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में मान्यता दी।

गुप्ता, एम. (2019) ने आधुनिक पाठ्यक्रम में साहित्य के समावेश पर बल देते हुए कहा कि साहित्य विद्यार्थियों के भावनात्मक और सांस्कृतिक विकास का प्रमुख साधन है। उन्होंने इसे मूल्य शिक्षा और जीवनोपयोगी अधिगम का अनिवार्य घटक बताया।

इन सभी पूर्ववर्ती शोधों और अध्ययनों का विश्लेषण यह स्पष्ट होता है कि छायावादी साहित्य और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 दोनों ही मानवीय मूल्यों, रचनात्मकता, आत्मबोध और समग्र व्यक्तित्व निर्माण को केंद्र में रखते हैं। इनका तुलनात्मक अध्ययन इस बात को इंगित करता है कि साहित्य और शिक्षा नीति के सम्मिलन से

शिक्षा प्रणाली को अधिक जीवंत, संवेदनशील और मानवीय बनाया जा सकता है।

शोध विधि

इस शोध का आधार गुणात्मक एवं तुलनात्मक विश्लेषणात्मक पद्धति रहा। अध्ययन का उद्देश्य छायावादी साहित्य में निहित शैक्षिक अवधारणाओं और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नवाचारों के बीच साम्य और भिन्नताओं का विवेचन करना था। इसके लिए चयनित साहित्य और नीति-दस्तावेज़ों का सामग्री विश्लेषण किया गया।

प्रक्रिया के अंतर्गत छायावादी कवियों, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की प्रतिनिधि रचनाओं का अध्ययन कर उनके शैक्षिक संकेतों की पहचान की गई। साथ ही, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख बिंदुओं जैसे कि समग्र शिक्षा, कला-आधारित अधिगम, मातृभाषा में शिक्षण और मूल्य शिक्षा का तुलनात्मक परीक्षण किया गया। इसके बाद, दोनों धाराओं के बीच निहित समानताओं और अंतरों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत कर निष्कर्ष निकाला गया।

शोध स्रोत

शोध में प्रयुक्त सामग्री को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

1. **प्राथमिक स्रोत:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का आधिकारिक दस्तावेज़ तथा छायावादी साहित्य की प्रमुख रचनाएँ, कामायनी, पल्लव, नीरजा और अनामिका आदि, ये स्रोत प्रत्यक्ष रूप से अध्ययन की आधारभूमि बने।
2. **द्वितीयक स्रोत:** आलोचनात्मक एवं समीक्षात्मक ग्रंथ, शोध-पत्र और शैक्षिक रिपोर्टें। उदाहरणस्वरूप, शर्मा (2016), पांडेय (2018), चतुर्वेदी (2020), तथा राजपूत एवं वालिया (2020) द्वारा प्रस्तुत अध्ययनों ने वैचारिक परिप्रेक्ष्य प्रदान किया।
3. **डिजिटल एवं संदर्भ स्रोत:** भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय की वेबसाइट से नीति से जुड़ी अद्यतन जानकारी, तथा "शोधगंगा" और "JSTOR" जैसे शैक्षणिक पोर्टलों से उपलब्ध शोध-पत्र। इसके साथ ही हिंदी साहित्य का इतिहास (रामचंद्र शुक्ल) और भारतीय काव्यशास्त्र (नागेन्द्र) जैसे संदर्भ ग्रंथों ने साहित्यिक आधार को और मजबूत किया।

शोध विवेचना

छायावादी साहित्य में आत्मा की गहराइयों में उतरने की प्रेरणा मिलती है। यह केवल सौंदर्य और कल्पना की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि मानव के आंतरिक विकास की साहित्यिक अभिव्यक्ति है। जयशंकर प्रसाद की कामायनी में 'मनु' के माध्यम से मानव की चेतन प्रवृत्तियों, ज्ञान, क्रिया और भावना का जो समन्वय प्रस्तुत किया गया है, वह समग्र शिक्षा की आवश्यकता को रेखांकित करता है। यह समन्वयात्मक दृष्टिकोण नई शिक्षा नीति में वर्णित अंतर्विषयक अध्ययन की रूपरेखा के अनुरूप है (शर्मा, 2016)। महादेवी वर्मा की कविता "जो तुम आ जाते एक बार" में प्रतीक्षा, करुणा और प्रेम की जो गहराई है, वह विद्यार्थियों में संवेदनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास के लिए प्रेरणास्रोत हो सकती है। उनकी रचनाएँ नारी संवेदना, त्याग और आत्मबलिदान के भावों से युक्त हैं, जो मूल्यपरक शिक्षा की दिशा में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

सुमित्रानंदन पंत का प्रकृति से तादात्म्य तथा निराला का विद्रोह और अस्वीकार भाव, बच्चों में पर्यावरणीय चेतना, आलोचनात्मक सोच और सृजनात्मकता के विकास के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं। इस प्रकार छायावादी साहित्य की रचनाएँ आधुनिक शिक्षा में भावनात्मक, नैतिक और सांस्कृतिक विकास के समन्वित मॉडल के रूप में प्रयुक्त की जा सकती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक ऐतिहासिक पहल है, जो भारत की शिक्षा व्यवस्था को समकालीन वैश्विक मानकों के अनुरूप ढालते हुए उसकी सांस्कृतिक आत्मा से भी जोड़ने का प्रयास करती है। यह नीति केवल सूचना केंद्रित अधिगम से आगे बढ़कर समग्र, रचनात्मक, नैतिक और अनुभवात्मक शिक्षा की वकालत करती है। नीति का मूल उद्देश्य "21वीं सदी के भारत को एक ज्ञान-आधारित समाज बनाना" है (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 2020)।

(क) समग्र एवं बहुविषयी शिक्षा: NEP 2020 विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों जैसे विज्ञान, कला, भाषा, सामाजिक विज्ञान और खेल का समेकित अध्ययन कराने की बात करती है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल एक विषय में विशेषज्ञ न बनाकर बहुआयामी दृष्टिकोण से युक्त बनाना है, जिससे उनकी सोच सृजनात्मक और समाधान-उन्मुख हो। यह दृष्टिकोण छायावाद की अंतःप्रेरणात्मकता और जीवन-दृष्टि से मेल खाता है।

(ख) कला-आधारित अधिगम: नीति के अनुसार, कला केवल सहगामी गतिविधि नहीं, बल्कि अधिगम की एक सशक्त विधा है। छात्र नाट्य, चित्रकला, संगीत और साहित्य के माध्यम से ज्ञान की अभिव्यक्ति कर सकते हैं। यह विचार छायावादी कविताओं की सौंदर्यप्रियता और कल्पना-प्रधानता से सीधे संबंध रखता है, जो छात्रों को भावनात्मक और रचनात्मक रूप से उन्नत बनाने में सहायक हो सकता है (पांडेय, 2018)।

(ग) मातृभाषा में शिक्षा: NEP 2020 प्रारंभिक वर्षों में मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा की वकालत करती है। यह बच्चों के बौद्धिक विकास, अभिव्यक्ति क्षमता और सांस्कृतिक आत्मीयता को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। छायावादी कवियों की भाषा शैली, विशेष रूप से निराला और महादेवी वर्मा की, संवेदनशीलता और भाषिक सौंदर्य का सजीव उदाहरण प्रस्तुत करती है, जो मातृभाषा के माध्यम से भावनाओं की गहराई तक पहुँचने की सामर्थ्य को पुष्ट करती है (चतुर्वेदी, 2020)।

(घ) अनुभवात्मक अधिगम: नीति ज्ञान को जीवन से जोड़ने की बात करती है, जहाँ विद्यार्थी अपने अनुभवों, संवादों और परियोजनाओं के माध्यम से सीखते हैं। यह विधि 'शिक्षा के लिए जीवन और जीवन के लिए शिक्षा' की धारणा को बल देती है। छायावादी साहित्य भी गहन जीवनानुभवों की कोमल और संवेदनशील अभिव्यक्ति है, जो अनुभव आधारित अधिगम के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है (शर्मा, 2016)।

(ङ) नैतिकता और मूल्य शिक्षा: NEP 2020 शिक्षा को केवल नौकरी प्राप्त करने का साधन नहीं मानती, बल्कि इसे एक ऐसे उपकरण के रूप में प्रस्तुत करती है जो छात्रों को उत्तरदायी, संवेदनशील और नैतिक नागरिक बनाए। यह दृष्टिकोण महादेवी वर्मा और प्रसाद की कविताओं में विद्यमान मानवीय करुणा, सहानुभूति और विवेक के स्वर से प्रतिध्वनित होता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में वर्णित शिक्षण पद्धतियाँ और नवाचार न केवल वर्तमान शिक्षा प्रणाली की कमियों को दूर करते हैं, बल्कि

वे छायावादी साहित्य में अंतर्निहित मूल्यों और विचारधाराओं से भी पूर्णतः सामंजस्य रखते हैं।

छायावादी साहित्य और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यद्यपि भिन्न कालखंडों के उपादान हैं, फिर भी इनमें सृजनशीलता, मानवीय संवेदना, नैतिकता और ज्ञान की अंतर्दृष्टि जैसी अनेक समरूपताएँ परिलक्षित होती हैं। यह तुलनात्मक विश्लेषण स्पष्ट करता है कि छायावाद की सौंदर्यात्मक, भावनात्मक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ नई शिक्षा नीति के लक्ष्यों से गहराई से जुड़ती हैं।

छायावादी साहित्य	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
आत्मबोध और जीवन-दृष्टि की खोज	नैतिक शिक्षा एवं आत्म-प्रेरणा आधारित शिक्षण
सौंदर्यबोध, कल्पना और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता	कला-आधारित और अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा
राष्ट्रप्रेम और सांस्कृतिक गौरव की स्थापना	भारतीय ज्ञान परंपरा एवं सांस्कृतिक शिक्षा पर विशेष बल
स्वतंत्रता, आलोचना और अभिव्यक्ति की स्वायत्तता	आलोचनात्मक चिंतन एवं नवाचारोन्मुख शिक्षण पद्धति का विकास

छायावाद जहाँ व्यक्ति की आंतरिक चेतना को जाग्रत कर उसे स्व से संवाद की ओर उन्मुख करता है, वहीं NEP 2020 विद्यार्थी को आत्म-प्रेरित, आत्मनिर्भर और सामाजिक उत्तरदायित्व वाला नागरिक बनने की दिशा में शिक्षित करने का प्रयास करती है। जैसे सुमित्रानंदन पंत की कविता "नव जीवन के नव रागों में नव स्वर भर दो" शिक्षा में रचनात्मकता की मांग को उद्घाटित करती है, वैसे ही NEP 2020 भी शिक्षा को नवाचार और सृजन की ओर ले जाती है (पांडेय, 2018)। महादेवी वर्मा की कविताओं में जिस प्रकार करुणा, आत्मानुशासन और त्याग की छवियाँ दृष्टिगत होती हैं, वे आधुनिक मूल्य शिक्षा की आवश्यकता से गहराई से जुड़ी हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस बात पर बल देती है कि छात्रों में केवल बौद्धिक दक्षता ही नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी की चेतना भी विकसित हो (राजपूत एवं वालिया, 2020)।

यह स्पष्ट होता है कि छायावादी साहित्य और NEP 2020 के नवाचार एक-दूसरे को अनुपूरक सिद्ध हो सकते हैं। छायावादी साहित्य न केवल शिक्षा को गहराई, गरिमा और मानवता का स्वर देने में सक्षम है, बल्कि यह आज की शिक्षा को विचारशील, सृजनशील और उत्तरदायी बनाने में भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

छायावादी साहित्य और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की शिक्षण पद्धतियाँ एक-दूसरे के पूरक प्रतीत होती हैं। दोनों ही ज्ञान को केवल सूचनाओं के संप्रेषण के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय, संवेदनात्मक और अनुभवात्मक प्रक्रिया के रूप में देखते हैं। छायावादी साहित्य, विशेषकर जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, पंत और निराला की रचनाएँ, शिक्षा के उस स्वरूप को साकार करती हैं जो जीवन के गूढ़ अनुभवों और आत्मबोध की ओर विद्यार्थियों को प्रेरित करती हैं। वहीं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को समग्र (holistic), अनुभवात्मक, बहु-विषयी, और नैतिक-केन्द्रित मानती है, जो बालकों को भावनात्मक, सामाजिक और बौद्धिक दृष्टि से परिपक्व बनाती है (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 2020)।

छायावादी साहित्य में निहित अनुभवशीलता विद्यार्थियों में जीवन के विविध पहलुओं को समझने की क्षमता विकसित करती है। कामायनी जैसे काव्यग्रंथ में मनोविज्ञान और जीवनदर्शन के प्रतीकात्मक चित्रण के माध्यम से छात्रों को आत्ममंथन और आत्मविश्लेषण की प्रेरणा मिलती है। यह वही अनुभूति है जिसे NEP 2020 अनुभवात्मक अधिगम कहकर शिक्षण का आधार मानती है। इस अधिगम में छात्र क्रियात्मक रूप से सीखते हैं, जिससे शिक्षा केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि जीवंत अनुभव बन जाती है (राजपूत एवं वालिया, 2020)।

इसी प्रकार महादेवी वर्मा की कविताएँ करुणा, त्याग और मानवीय संवेदना से परिपूर्ण हैं। यह भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नैतिक जागरूकता को बढ़ावा देने में सहायक है। जब विद्यार्थी इन कविताओं से रूबरू होते हैं, तो उनमें नैतिक दृष्टिकोण, सामाजिक उत्तरदायित्व और अंतरात्मा की आवाज़ को समझने की क्षमता विकसित होती है। NEP 2020 भी यही दृष्टिकोण अपनाती है कि शिक्षा केवल बौद्धिक दक्षता न होकर, नैतिकता, करुणा और सह-अस्तित्व पर आधारित हो (चतुर्वेदी, 2020)।

रचनात्मकता और कल्पनाशीलता छायावादी साहित्य का केन्द्रीय तत्व रहा है। निराला की कविताओं में रूढ़ियों के विरोध और नए शिल्प की खोज शिक्षा को नवाचार और सृजनात्मक अभिव्यक्ति की ओर अग्रसर करती है। NEP 2020 छात्रों की जिज्ञासा, अनुसंधान प्रवृत्ति और स्वतंत्र चिंतन को पोषित करने का प्रयास करती है। यह प्रक्रिया केवल तथ्यों को याद रखने की नहीं, बल्कि उन्हें आत्मसात करने, पुनर्व्याख्यायित करने और नवीन दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने की है, जो छायावाद की मूल चेतना से मेल खाती है (शर्मा, 2016)। मातृभाषा में अधिगम की जो सिफारिश NEP 2020 करती है, वह छायावादी साहित्य की भाषिक गरिमा को और भी महत्वपूर्ण बना देती है। छायावाद की भाषा कोमल, संवेदनात्मक और प्रतीकात्मक है जो केवल मातृभाषा में ही अपने भावों की सम्पूर्णता में संप्रेषित हो सकती है। मातृभाषा में शिक्षा का प्रयोग विद्यार्थियों के मनोविज्ञान और भावबोध से जुड़ाव को अधिक प्रभावी बनाता है। इससे न केवल बौद्धिक विकास होता है बल्कि संस्कृति, भाषा और विचार की गहराइयों से विद्यार्थियों का संबंध स्थापित होता है (पांडेय, 2018)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल भावना यह है कि शिक्षा केवल रोजगारपरक ही नहीं, बल्कि संस्कृति-संपन्न, मूल्यनिष्ठ और रचनात्मक होनी चाहिए। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि पाठ्यचर्या में ऐसे साहित्यिक आयामों को स्थान दिया जाए जो विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास में सहायक हों। छायावादी साहित्य, अपनी आत्मबोधपूर्ण, सौंदर्यपरक और नैतिक दृष्टि के कारण, इस दिशा में एक अत्यंत प्रभावशाली संसाधन सिद्ध हो सकता है।

छायावादी कवियों की रचनाएँ जैसे, जयशंकर प्रसाद की कामायनी, सुमित्रानंदन पंत की पल्लव, महादेवी वर्मा की नीरजा और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की अनामिका हिंदी भाषा की गहराई, विविधता और अभिव्यक्तिपरक शक्ति का श्रेष्ठ उदाहरण हैं। इन रचनाओं का विद्यालयी पाठ्यक्रम, विशेष रूप से कक्षा 9 से 12 तक, में समावेश भाषा शिक्षण को केवल व्याकरणिक ज्ञान तक सीमित नहीं रखेगा, बल्कि साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों में सांस्कृतिक चेतना, प्रतीकात्मक बोध और अभिव्यक्तिगत सृजनशीलता को विकसित करेगा (पांडेय, 2018)। छायावादी साहित्य की अंतर्वस्तु में करुणा, आत्मसंयम, स्वतंत्रता, सामाजिक उत्तरदायित्व और आत्मबल जैसे नैतिक मूल्यों की गहन उपस्थिति है। महादेवी वर्मा की कविताएँ जहाँ त्याग और सहानुभूति की भावनाओं से परिपूर्ण हैं, वहीं प्रसाद की कामायनी में आस्था और विवेक के माध्यम से आत्मोन्नयन की प्रेरणा मिलती है। ऐसे साहित्य को मूल्य शिक्षा के संदर्भ में दृष्टांतों के रूप में प्रस्तुत कर विद्यार्थियों में नैतिक निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक चेतना विकसित की जा सकती है (शर्मा, 2016)।

छायावादी साहित्य अपनी कल्पना-प्रधानता, दृश्यात्मकता और लयात्मक संरचना के कारण दृश्य-कला, नाट्य और संगीत के साथ सहज रूप से एकीकृत हो सकता है। कामायनी जैसे महाकाव्य को नाट्य प्रस्तुति, चित्रांकन या संगीतबद्ध पाठ के रूप में कक्षा में प्रयुक्त किया जा सकता है। यह विधा राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा सुझाए गए कला-एकीकृत अधिगम (Art-Integrated Pedagogy) को साकार करने का प्रभावी माध्यम बन सकती है (चतुर्वेदी, 2020)। छायावादी साहित्य केवल भाषिक अध्ययन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह दर्शन, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र और इतिहास जैसे विषयों से भी गहरे रूप से संबद्ध है। कामायनी में मनोविश्लेषण और वैदिक दर्शन का समन्वय, पंत की कविताओं में प्रकृति-चिंतन और महादेवी वर्मा की रचनाओं में नारी चेतना, विद्यार्थियों के अंतर्विषयक बौद्धिक विकास को प्रेरित कर सकते हैं। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति की उस परिकल्पना से मेल खाता है जो शिक्षा को विषयों की सीमाओं से परे ले जाने की वकालत करती है। साथ ही, छायावादी साहित्य भारतीय संस्कृति, परंपरा और आध्यात्मिक मूल्यों का सजीव दर्पण है। जब इसे पाठ्यक्रम का अंग बनाया जाता है, तब यह विद्यार्थियों को अपनी जड़ों से जोड़ने और आत्म-चिंतन की दिशा में उन्मुख करने का अवसर प्रदान करता है। मातृभाषा में ऐसे साहित्य का शिक्षण विद्यार्थियों में भाषिक आत्मीयता, भावनात्मक गहराई और सांस्कृतिक गौरवबोध को जन्म देता है (राजपूत एवं वालिया, 2020)।

अतः, यदि छायावादी साहित्य को समकालीन पाठ्यचर्या में एकीकृत किया जाए तो यह केवल भाषा शिक्षण की सीमाओं को नहीं, बल्कि शिक्षा के मानवोन्मुख, नैतिक और रचनात्मक आयामों को भी विस्तार देने में सक्षम होगा। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की उस व्यापक संकल्पना के अनुरूप है, जो शिक्षा को केवल ज्ञान-प्रदाय की प्रक्रिया न मानकर, व्यक्तित्व विकास, संवेदनशीलता और सामाजिक चेतना की दिशा में एक सशक्त माध्यम के रूप में देखती है।

निष्कर्ष

छायावादी साहित्य और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, दोनों ही भिन्न समय-संदर्भों में जन्मे दो वैचारिक प्रवाह हैं, किंतु इनकी अंतर्धारा में एक अद्भुत साम्यता परिलक्षित होती है। छायावाद जहाँ भारतीय साहित्य के पुनरुत्थान का संवेदनशील और कलात्मक माध्यम बना, वहीं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में खड़ा करते हुए उसकी सांस्कृतिक आत्मा की पुनर्स्थापना की चेष्टा करती है।

इस शोध-पत्र में प्रस्तुत तुलनात्मक अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि छायावादी साहित्य में निहित आत्मबोध, सौंदर्यबोध, नैतिकता, संवेदनशीलता, और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे तत्त्व, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख शैक्षिक उद्देश्यों जैसे कि कला-आधारित अधिगम, मातृभाषा में शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, और मूल्य-आधारित शिक्षा से पूर्णतः मेल खाते हैं।

यह भी स्पष्ट रूप से प्रतिपादित हुआ कि छायावादी साहित्य को पाठ्यचर्या में समायोजित करके न केवल भाषा और साहित्य शिक्षण को समृद्ध किया जा सकता है, बल्कि छात्रों में रचनात्मकता, सांस्कृतिक चेतना और नैतिक दृष्टिकोण का भी विकास किया जा सकता है। इससे शिक्षा एक सूचना-केंद्रित प्रक्रिया न होकर एक गहराई से जुड़ा, मानव-केंद्रित और समाजोन्मुख साधन बन सकती है।

आज जब शिक्षा प्रणाली तकनीकी दक्षता और प्रतिस्पर्धात्मकता के दबाव में मानवीय मूल्यों से दूर होती जा रही है, ऐसे में छायावादी साहित्य की पुनर्पाठ प्रक्रिया हमें यह स्मरण कराती है कि शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के अंतर्मन को स्पर्श कर उसमें विवेक, करुणा और सौंदर्यबोध का संचार करना भी है।

इसलिए, यह अनुशंसा की जा सकती है कि शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में साहित्य, विशेषतः छायावाद जैसे आंदोलनों को स्थान देकर हम शिक्षा को अधिक मानवीय, सौंदर्यपरक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बना सकते हैं। यह न केवल एक शैक्षिक प्रयोग होगा, बल्कि भारतीय शिक्षा की आत्मा की ओर एक प्रभावशाली वापसी भी सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ

1. शर्मा, पी. (2016). हिंदी साहित्य में छायावाद का सामाजिक संदर्भ. वाराणसी: ज्ञान गंगा प्रकाशन।
2. पांडेय, एस. (2018). छायावाद: कविता और चिंतन. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
3. चतुर्वेदी, ए. (2020). भारतीय साहित्यिक सौंदर्यशास्त्र एवं शिक्षण पद्धति. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
4. राजपूत, जे. एस., एवं वालिया, क. (2020). नई शिक्षा नीति 2020 में शैक्षिक नवाचार. भारतीय शिक्षा जर्नल, 46(2), 5–16।
5. मानव संसाधन विकास मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार।
6. सिंह, ए. (2018). शिक्षा में साहित्य और कला का प्रभाव: भावनात्मक बुद्धिमत्ता और मूल्य शिक्षा का अध्ययन. भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका, 12(3), 45–58।
7. तिवारी, आर. (2016). छायावाद और रहस्यवाद: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. लखनऊ: साहित्य भवन।
8. यूनेस्को. (2019). लर्निंग टू बिकम: ए ग्लोबल रिपोर्ट ऑन द फ्यूचर्स ऑफ एजुकेशन. पेरिस: यूनेस्को प्रकाशन।
9. गुप्ता, एम. (2019). आधुनिक पाठ्यक्रम और साहित्य का समावेश. दिल्ली: अटल प्रकाशन।
10. शुक्ल, रामचंद्र. (1933). हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
11. नागेन्द्र. (1981). भारतीय काव्यशास्त्र. दिल्ली: विश्वभारती प्रकाशन।